खंड प्रस्तावना

भाषा का यह कोर्स इसलिए बनाया गया है कि आप भाषा के विभिन्न पहलुओं से परिचित हो सकें। हमें उम्मीद है कि इस कोर्स को करने के बाद आप भाषा के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाएँगे और बच्चों को भाषा अधिक रोचक व चुनौतीपूर्ण ढंग से पढ़ा सकेंगे। **पहली इकाई** भाषा की प्रकृति, संरचना एवं उसके मनोवैज्ञानिक व सामाजिक पक्षों के बारे में है। **दूसरी इकाई** में हम आपको भारत की बहुभाषिता की एक झलक दिखायेंगे और इस बात की भी चर्चा करेंगे कि हजारों भाषाओं के होते हुए भी भारत एक भाषाई इकाई है। इसी इकाई में हम भारतीय संविधान में भाषा के बारे में दिए गए प्रावधानों की भी चर्चा करेंगे। **तीसरी इकाई** भाषा सीखने व सिखाने से संबंधित है। बच्चे भाषा सीखने की असीम क्षमता लेकर पैदा होते हैं और तीन–चार साल की ही आयु में भाषा समझने व बोलने में निपुण हो जाते हैं। बहुत कम समय में वे रोज कई नये वाक्य समझते और बोलते हैं। यह सचमुच एक आश्चर्य का विषय है कि बच्चे इतनी छोटी उम्र में कैसे अपनी भाषा के जटिल व्याकरण को पकड़ लेते हैं? क्या वे एक सार्वभौमिक व्याकरण लेकर पैदा होते हैं? इस बात पर भी सोच–विचार करेंगे। भाषा सीखने–सिखाने में व्याकरण का और पढ़ाने के तरीकों का क्या असर हो सकता है यह भी विचारणीय है। हम पढ़ाने के अलग–अलग तरीकों जैसे कि व्याकरण अनुवाद विधि (Grammar Translation Method), प्रत्यक्ष विधि (Direct Method), श्रवण– भाषण (सुनना–बोलना) विधि (Audio-lingual Method), सम्प्रेषणात्मक विधि (Communicative Approach) आदि पर चर्चा करेंगे।

विषय सूची

टिप्पणी

इकाई 1 भाषा क्या है?

संरचना

1.0 परिचय

इस इकाई में हम यह समझने की कोशिश करेंगे कि भाषा क्या है। भाषा की क्या परिभाषा होनी चाहिए, क्या परिकल्पना होनी चाहिए। व्याकरण के दृष्टिकोण से भाषा का स्वरूप कैसा है? ध्वनि, शब्द, वाक्य एवं संवाद के धरातल पर उसकी संरचना कैसी है? हम भाषा के मनोवैज्ञानिक व सामाजिक पक्षों के बारे में भी चर्चा करेंगे। बहुत ही संक्षेप में हम यह समझने की भी कोशिश करेंगे कि किसी भाषा में प्रवीण होने का क्या मतलब है और भाषा के मानकीकरण की क्या प्रक्रिया होती है। भाषा और साहित्य के संबंध के बारे में भी कुछ चर्चा करेंगे।

टिप्पणी

1.1 अधिगम उद्देश्य

यह इकाई विशेष रूप से भाषा की प्रकति एवं संरचना के बारे में है। हमें उम्मीद है कि इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- भाषा के स्वरूप से अवगत हो पाएँगे;
- भाषा और समाज के आपसी संबंध को समझ पाएँगे;
- भाषा के लिए मानव मस्तिश्क की जन्मजात अनुकूलता को रेखांकित कर पाएँगे;
- भाषा की संरचना का विश्लेषण कर पाएँगे;
- भाषा के मानकीकरण पर अपनी राय दे पाएँगे;
- भाषा में प्रवीणता का मतलब समझ पाएँगे; एवं
- आम बोलचाल की भाषा व साहित्यिक भाषा में अंतर स्पष्ट कर पाएँगे।

1.2 भाषा की परिकल्पना और महत्त्व

भाषा को अक्सर दो अलग–अलग दृष्टिकोणों से देखा जाता है। आम लोग भाषा को केवल बातचीत का एक माध्यम भर ही मानते हैं। भाषा की संरचना को समझने वाले भाषावैज्ञानिक उसे एक शब्दकोष व एक व्याकरण का योग भर मानते हैं। वास्तव में ये दोनों ही परिभाषाएँ भाषा के दायरे को बहुत सीमित कर देती हैं। इन दोनों परिभाषाओं में यह मान लिया जाता है कि भाषा पहले है और मनुष्य बाद में। यह समझने में कोई मुश्किल नहीं होनी चाहिए कि यह सच नहीं है। लोग नहीं होंगे तो भाषा कहाँ से होगी और भाषा नहीं होगी तो शब्दकोश किसका लिखेंगे और व्याकरण किसका लिखेंगे। पहले लोग होते हैं, एक समाज होता है और वे लोग मिलजुलकर अपनी भाषा को बनाते हैं। इस निर्माण की प्रक्रिया में भाषा के साथ कई और पहलू जुड़ जाते हैं जिनके बारे में न तो आम आदमी सोचते हैं और न ही अधिकतर भाषावैज्ञानिक। इसमें तो कोई शक नहीं कि जैसे–जैसे मानव का विकास हुआ, उसमें भाषा निर्माण व भाषा सीखने की क्षमता का भी विकास हुआ। लेकिन उस क्षमता का कोई फायदा नहीं होता अगर समाज नहीं होता। इसलिए भाषा की परिभाषा में यह समझने के लिए कि भाषा वास्तव में क्या होती है, हमें इंसान, उसके दिमाग व समाज के बारे में एक साथ सोचना होगा।

सबसे पहले तो भाषा एक इंसान की पहचान होती है। जब कोई यह कहता है कि मैं 'गोन्डी' बोलता हूँ तो वह केवल यह ही नहीं कह रहा है वह कौनसी भाषा बोलता है। वह यह भी बता रहा है कि वह किस समाज का सदस्य है और वह किस समाज के रीति–रिवाजों का पालन करता है। कहाँ के लोग उसको पहचानते हैं। दूसरी बात यह है कि भाषा अपनी संरचना में उन सब रिश्तों को भी दिखाती है जिनके सहारे एक समाज बना

टिप्पणी

रहता है। कौन बड़ा है, कौन छोटा है, कौन प्यार का पात्र है और कौन आदर का इन सबकी झलक हमें भाषा में मिल जाती है। वास्तव में भाषा और समाज में एक खास रिश्ता है। भाषा वह माध्यम है जो छोटे–बड़े और ऊँच–नीच के रिश्तों को सदियों तक बनाये रखती है।

मानसिक दृष्टिकोण से भी भाषा का विशेष महत्त्व है। यह देखकर सचमुच बहुत आश्चर्य होता है कि संसार का हर बच्चा चाहे वह किसी भी समाज में पलता हो और किसी भी भौगोलिक स्थिति में रहता हो चार वर्ष की उम्र तक कम से कम भाषा की दृष्टि से वह एक वयस्क बन जाता है। यानी चार वर्ष की आयु तक हर बच्चा भाषा की एक आधारभूत शब्दावली और वाक्य संरचना के मुख्य नियम सीख जाता है। हमें कभी यह कठिनाई नहीं होती कि हम चार वर्ष के बच्चे के साथ बातचीत कर सकें, उसे कहानी सुना सकें और उससे नित नई–नई कहानियाँ सुन सकें।

कुछ अन्य मानसिक पहलू भी हैं। दूरियाँ बढ़ाने का और दूरियाँ मिटाने का भाषा से अधिक सशक्त माध्यम और कोई नहीं है। हजारों कोस दूर बैठे अपने दोस्त से झगड़ा कर आप फोन पटक देते हैं और कुछ मिनट बाद फिर से फोन उठा उससे दोस्ती कर लेते हैं। कैसे? भाषा से!

यह भी आम बात है कि बच्चे एक ही नहीं अपितु अपने परिवार, गली–कूचे, आस–पड़ोस की वो सभी भाषाएँ सीख जाते हैं जो उनके आसपास बोली जाती हैं। भाषा सीखने की क्षमता केवल यहीं तक सीमित नहीं कि हम लोग केवल एक ही भाषा सीख सकते हैं। हर व्यक्ति भाषा के विविध स्वरूप व अनेक भाषाएँ व उनके विविध स्वरूप सीखने की क्षमता रखता है। वास्तव में बहुभाषिता मनुष्य के स्वाभाविक है और इंसान होने की एक ख़ास पहचान है।

संरचना के दृष्टिकोण से भी भाषा की कई विशेषताएँ हैं। अगली इकाइयों में हम उन पर गहराई से चर्चा करेंगे। लेकिन भाषा को एक समग्र दृष्टिकोण से समझने के लिए इतना तो यहाँ कहना जरूरी है कि भाषा ध्वनि, शब्द, वाक्य और बातचीत के स्तर पर पूरी तरह से नियमबद्ध होती है। ऐसा नहीं हो सकता कि हम जिन ध्वनियों को चाहें उनको जोड़कर शब्द बना लें और शब्दों को किसी भी मनचाहे क्रम में रखकर वाक्य बना लें। और वाक्यों को किसी भी मनचाहे क्रम में रखकर एक संवाद की रचना कर लें।

एक और बात जो भाषा की प्रकृति के बारे में समझना आवश्यक है वह यह कि भाषा निरन्तर बदलती रहती है। लेकिन यह बदलाव इतना धीरे–धीरे होता है कि अक्सर माँ–बाप को यही लगता है कि बच्चे वही भाषा बोल रहे हैं जो वह खुद बोलते हैं। वास्तविकता यह है कि परदादा–परदादी की भाषा से दोहता–दोहती की भाषा बहुत अलग होती है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न

1. आम तौर पर भाषावैज्ञानिक, भाशा को निम्न में से किन दो का योग भर मानते हैं?

   (क) शब्द व वाक्य (ख) ध्वनि व वाक्य

   (ग) शब्दकोश व व्याकरण (घ) ध्वनि व व्याकरण

2. बच्चों को भाषा सीखने में उनके आसपास का परिवेश कैसे मदद करता है?

3. भाषा इंसान की पहचान होती है। कैसे? स्पष्ट कीजिए।

1.3 भाषा व व्याकरण

लोग अक्सर शुद्ध और अशुद्ध भाषा में या भाषा व बोली में अलग–अलग तरह से अन्तर करते हैं। वास्तव में जहाँ तक अपनी भाषा/भाषाओं को बोलने का प्रश्न है, उसमें कोई गलती कर ही नहीं सकता और अगर कभी–कभार कोई भूल–चूक हो भी जाये तो आप उसे तुरन्त ठीक करने की क्षमता रखते हैं। अशुद्ध भाषा का सवाल तो तभी पैदा होता है जब आप किसी अन्य समाज की या बिल्कुल विदेशी भाषा सीख रहे हों। या तब पैदा होता है जब आप भाषा के किसी रूप–विशेष को मानकीकृत मान लें और उसी से जुड़े अन्य स्वरूपों को बोली या देहाती भाषा का नाम दे दें (इसके बारे में आगे विस्तार से चर्चा करेंगे)।

हर भाषा (उसे बोली कहें या कोई और नाम दें) व्याकरणयुक्त होती है। वह ध्वनि, शब्द, वाक्य व संवाद के स्तर पर नियमबद्ध होती है। इस बात को हम हर स्तर पर कुछ उदाहरण लेकर समझ सकते हैं।

1.3.1 ध्वनि संरचना

हर भाषा की अपनी ध्वनि व्यवस्था होती है लेकिन ध्वनि के कुछ नियम ऐसे भी होते हैं जो हर भाषा में पाये जाते हैं। उदाहरण के लिए हर भाषा में स्वर और व्यंजन होते हैं। वे अनेक हो सकते हैं और बहुत कम भी। संसार में शायद ही कोई ऐसी भाषा हो जिसमें 3 से कम स्वर हों, अधिक से अधिक 20 हो सकते हैं। व्यंजन 8–10 से लेकर 50–60 तक हो सकते हैं। आम भाषाओं में ध्वनियों की संख्या कुल मिलाकर 40–50 तक होती है। अंग्रेजी और हिन्दी के विविध स्वरूपों में इनकी संख्या इस प्रकार है–

	स्वर	व्यंजन	कुल
अंग्रेजी	20	24	44
हिन्दी	10	33	43

ये वे ध्वनियाँ नहीं हैं जो अक्सर वर्णमाला में लिखी जाती हैं। ये अंग्रेजी व हिन्दी की सार्थक ध्वनियाँ हैं। यानी इनके प्रयोग करने से शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं। उदाहरण के लिए,

टिप्पणी

अंग्रेजी में	fil	'fill'	
	fiil	'feel'	
हिन्दी में	mil	'mill'	मिल
	mill	'mile'	मील

इन चारों शब्दों से पता लगता है कि हिन्दी व अंग्रेजी दोनों में छोटी 'इ' व बड़ी 'ई' सार्थक ध्वनियाँ हैं। यदि सब कुछ वैसा ही रहे जैसा पहले था लेकिन 'इ' की जगह 'ई' कह दें तो अर्थ बिल्कुल बदल जायेगा। इसी तरह से–

अंग्रेजी में	kil	'kill'	
	pil	'pill'	
हिन्दी में	kal	'tomorrow/yesterday	कल
	pal	'moment'	पल

से पता चलता है कि दोनों भाषाओं में 'प्' और 'क्' सार्थक ध्वनियाँ हैं।

क्या हिन्दी व अंग्रेजी की इन 43–44 ध्वनियों को हम जैसे चाहें एक साथ रख सकते हैं? या फिर ध्वनियों को सजाने के कुछ नियम हैं, जो हर व्यक्ति अपनी भाषा के बारे में जानता है या स्वयं सीख लेता है और वह भी 4–5 साल की आयु में ही। मान लीजिए कि हम हिन्दी में शब्दों के शुरू में दो व्यंजन एक साथ रखना चाहते हैं जबकि पहला व्यंजन 'प्' ही हो। क्या आपको लगता है कि दूसरा व्यंजन कुछ भी हो सकता है। सोच कर देखें।

*प्काव	*प्खील	*प्गेल
*प्चाव	*प्चील	*प्छेल
*प्टाव	*प्टील	*प्ठेल
*प्ताव	*प्तील	*प्थेल आदि

तो क्या नियम हैं जो हम सब जानते हैं?

नियम–1: यदि शब्द के आरंभ में दो व्यंजन हों और पहला 'प्' हो, तो दूसरा केवल य्, र्, ल्,व् ही हो सकता है।

यह नियम आप स्वयं शब्द बनाकर या हिन्दी के किसी भी शब्दकोश से सहज जाँच सकते हैं।

ध्वनि–आधारित एक और नियम देखते हैं। ज़रा सोचिए हिन्दी व अंग्रेजी दोनों में ही किसी भी शब्द के आरंभ में किसी स्वर ध्वनि आने से पहले अधिक से अधिक कितनी व्यंजन ध्वनियाँ आ सकती हैं। पहले यह समझ लें कि 'psychology' जैसे शब्द में '0' स्वर ध्वनि आने से पहले 5 नहीं केवल 1 ही व्यंजन ध्वनि है और वह है 'स्'। अंग्रेजी में 'stress' शब्द में 'ई' स्वर की ध्वनि आने से पहले तीन व्यंजन ध्वनियाँ हैं– 'स्' 'ट्' और 'र्'। 'स्ट्रीट'।